बाइबल टीचर

वर्ष 15 जनवरी 2018 अंक 2

सम्पादकीय

विवाह करना आदर की बात है

आदम और हव्वा को परमेश्वर ने बनाया था। अदन की वाटिका में यह पहला विवाह था जिसे परमेश्वर ने कराया था। एक बहुत ही विशेष बात जो हम देखते हैं कि आदम के लिये केवल एक हव्वा को बनाया गया था तथा ऐसे ही हव्वा के लिए एक आदम को बनाया गया था। परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी करके बनाया था। विवाह का अर्थ है नर और नारी का रिश्ता। कभी भी पुरुष का संबंध पुरुष से नहीं होता और न ही नारी किसी नारी से विवाह करती है। अर्थात् बाइबल समलैंगिक रिश्ते का विरोध करती है।

परमेश्वर का वचन हमें बताता है, कि "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए" (इब्रानियों 13:4)। कुछ लोगों ने विवाह तथा रिश्तों को मज़ाक बना दिया है। यदि विवाह को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखा जाए तो हम इसे आदर देंगे। विवाह करना एक अच्छी और सुन्दर बात है। कई लोगों को मैंने कहते हुए सुना है कि विवाह करना कोई आवश्यक नहीं है, क्योंकि हम बिना विवाह के भी एक साथ रह सकते हैं। जो भी लोग विवाह करने की सोच रहे हैं, उन्हें यह समझना चाहिए कि विवाह पूरी उमर के लिए साथ रहने का होता है। छोटी-छोटी बातों पर लोग तलाक ले लेते हैं, जबकि परमेश्वर इस बात से घृणा करता है। (मलाकी 2:16)। परमेश्वर कहता है कि, "मैं स्त्री त्याग से घृणा करता हूं। क्योंकि परमेश्वर आपके विवाह का साक्षी हुआ था।" (मलाकी 3)। विवाह करने से पहले हमें अच्छी तरह से सोच लेना चाहिए क्योंकि यह साथ तब तक का होता है जब तक मृत्यु आपको अलग न कर दे। बाइबल कहती है, "पति अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे" (उत्पत्ति 2:24)। विवाह का अर्थ है पति तथा पत्नी एक दूसरे से प्रेम करते हैं जैसे कि प्रेरित पौलुस ने लिखा था, "हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसियां से प्रेम करके अपने आप को दे दिया।" (इफि. 5:25)। युवाओं को विवाह करने से पहले इस बात के विषय में सोचना चाहिए। लिखा है, "पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने" (इफि. 5:23) भय मानने का अर्थ है, उसका आदर करें।

विवाह के पश्चात् आपका एक परिवार बन जाता है। आपको यह समझना चाहिए कि परमेश्वर की सहायता से आपका परिवार बना है। बाइबल कहती है,

"यदि घर को यहोवा (परमेश्वर) न बनाए तो उसके बनाने वाले का परिश्रम व्यर्थ होगा।" (भजन 127:1)। जब दो लोग यानि लड़का-लड़की विवाह करते है तो उन्हें परमेश्वर को अपना गवाह बनाना चाहिए। प्रभु आपके परिवार में वास करे। प्रचारक ने आपकी शादी की रस्म तो की है परन्तु याद रखें परमेश्वर ने आपको जोड़ा है। इसलिये यीशु ने कहा था, "सो अब वे दो नहीं, परन्तु एक तन है : इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।" (मत्ती 19:6)। बड़े ही दु:ख की बात है कि दो जन काफी समय एक साथ रहने के पश्चात् डीवोर्स (तलाक) की बात करने लगते हैं। आप शायद उन वायदों को भूल जाते हैं जो आपने प्रभु के सामने एक-दूसरे से किये थे। यदि आप विवाहित हैं तो यह प्रण लीजिये कि आप अपने साथी के प्रति मृत्यु तक विश्वासयोग्य बने रहेंगे।

बड़े दु:ख की बात है कि कई युवा जल्दबाज़ी में विवाह कर लेते हैं और बाद में पछताते हैं। यह एक बड़ा ही मुख्य और महत्वपूर्ण चुनाव होता है जो हमें सोच-समझकर करना चाहिए। यदि आप विवाह की सोच रहे हैं तो सोच समझकर आपस में बात-चीत कीजिये। एक मसीही को अपना जीवन साथी मसीही चुनना चाहिए। गैर-मसीही से विश्वास करके कई लोगों ने अपने विश्वास को छननी कर लिया है। प्रेरित पौलुस ने कहा था, "अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जूतों, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल-जोल? (2 कुरि. 6:14)। कितना अच्छा होगा, यदि दोनों जन मसीह की देह अर्थात् कलीसिया के सदस्य हो।

विवाह करने में कभी भी जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। दोनों पक्षों को अच्छी तरह परख लेना चाहिए। किसी ने सच कहा है कि जल्दबाजी का काम शैतान का होता है। युवाओं को सलाह देते हुए प्रेरित पौलुस कहता है, "अपने आप को पवित्र बनाए रख" (1 तीमु. 5:22)। फिर वह कहता है, "कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, चाल चलन, प्रेम और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा। इसलिये बहुत आवश्यक है कि विवाह से पहले सोच लें कि आने वाले वर्षों में एक साथ रहकर हमारा भविष्य कैसा होगा? हमारा प्रभाव हमारे बच्चों पर कैसा पड़ेगा? विवाह करने से पहले इस बात की पड़ताल कर लें कि जिस व्यक्ति से मैं विवाह कर रही या कर रहा हूं वो हमारे परिवार के लिये कैसी या कैसा होगा? कई बार इस बात में हम धोखा भी खा जाते हैं।

परमेश्वर ने आरंभ से यह दिखाया था कि पति-पत्नी में आपस में एक गहरा अटूट संबंध होता है जैसे कि लिखा है, "फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उससे मेल खाए।" (उत्पत्ति 2:18)। जब आदम को उसकी पत्नी मिली तो उसने कहा वह "उसकी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है। जरा देखिए कि यह रिश्ता कितना गहरा है। बड़े दु:ख की बात है कि कई पति बिना सोचे-समझे अपनी पत्नी पर हाथ उठाते हैं। लोग इस गहरे रिश्ते को भूल जाते है तथा कई बार एक-दूसरे को धोखा देते हैं। एक पत्नी को अपने पति के प्रति सदा विश्वासयोग्य बने रहना चाहिए तथा पति को भी अपनी पत्नी के साथ विश्वास योग्य बना रहना चाहिए।

देखिए, हम इस बात को देख रहें हैं कि विवाह एक बहुत आदर की बात है। इसे हमें आदर के साथ देखना चाहिए। एक और बात बाइबल से हम सीखते हैं कि पति-पत्नी को आपस में एक-दूसरे का ध्यान रखना चाहिए जैसे कि पौलुस कहता है, "पति अपनी पत्नी का हक पूरा करे, और वैसे ही पत्नी भी अपने पति का" (1 कुरि. 7:3)। यह एक आत्मिक तथा भौतिक रिश्ता है, इसलिये इसकी कदर करनी चाहिए।

इसलिये सोच-समझकर अपने जीवन का फैसला कीजिये। क्योंकि जब रिश्ता जुड़ जाता है तब उसको तोड़ने में दु:ख और दर्द होता है। जब परमेश्वर दो जनों को जोड़ता है तो वो चाहता है कि वे जीवनभर एक साथ रहें क्योंकि जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करें। शादी करना एक सीरियस जीवन का फैसला है इसलिये अच्छी तरह से विचार करके फैसला करें।

आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य

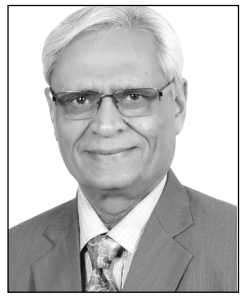

सनी डेविड

इसमें कोई संदेह नहीं, कि समय-समय पर अपने लेखों द्वारा मैं आपका ध्यान कुछ ऐसी बातों पर भी दिलाता रहता हूं जिन्हें आज बाइबल के नाम पर लोगों को सिखाया जा रहा है, परन्तु वास्तव में परमेश्वर के वचन से उन बातों का कोई संबंध नहीं है। इसके अतिरिक्त मैं कुछ ऐसी बातों को भी अक्सर आपके सामने रखता हूं जिन्हें कुछ लोग परमेश्वर के वचन में से लेकर तोड़-मरोड़कर पेश कर रहे है।

जब हम प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व पर विचार करते हैं, तो हम यह देखते हैं कि उससे संबंधित प्रत्येक बात बड़ी ही उद्देश्यपूर्ण थी। उसका जन्म, जीवन, कार्य, उपदेश और शिक्षाएं और उसकी मृत्यु और जी उठना और फिर पिता के पास स्वर्ग में वापस चले जाना, इन सभी बातों में एक बड़ा ही विशेष उद्देश्य था। उसके जन्म का उद्देश्य मृत्यु था; और उसके जीवन का उद्देश्य हमारे लिये आदर्श था। उसके सब कामों का उद्देश्य लोगों को यह विश्वास दिलाने का था कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। और उसकी शिक्षाओं तथा उपदेश में यह उद्देश्य था कि मनुष्य अनन्त जीवन के मार्ग को जाने। उसकी मृत्यु में हमारे पापों के प्रायश्चित का उद्देश्य था; और उसके जी उठने से आज हमें यह आश्वासन मिलता है कि उसकी प्रतिज्ञानुसार एक दिन हम सब भी इसी प्रकार उसमें जिलाए जाएंगे। इसी प्रकार मृत्यु के बाद उसके स्वर्ग पर ऊपर उठा लिये जाने के द्वारा आज हमें यह निश्चय होता है, कि जब वह दोबारा प्रगट होगा और हम सब जिलाए जाएंगे तो हम सब जो उसमें है उसके साथ ऊपर उठाएं जाएंगे ताकि जहां वह रहे वहीं हम भी उसके साथ हमेशा तक रहेंगे।

सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि यीशु से संबंधित या उसके संबंध में प्रत्येक बात का एक विशेष उद्देश्य था। जब यीशु पृथ्वी पर था तो उसने अनेक आश्चर्यजनक कार्य किए। जैसे कि हम पढ़ते हैं उसके बारे में, कि उसने एक विवाह के उत्सव में सादे पानी को क्षण भर में अच्छे शरबत में बदल डाला। फिर एक जगह पांच हजार लोगों की भूखी भीड़ को उसने कुल पांच रोटी और दो मछलियों के द्वारा भोजन खिलाकर तृप्त किया और जब उन लोगों के आगे से भोजन के बचे टुकड़े बटोरे गए तो उनसे बारह टोकरियां भर गई। इसी प्रकार, एक अन्य स्थान पर भी उसने सात रोटियां लेकर चार हजार लोगों को खाना खिलाया, और वहां भी बचे हुए टुकड़ों के सात टोकरे उठाए गए। फिर एक अन्य स्थान पर हम पढ़ते हैं, कि एक बार जब वह अपने चेलों के साथ नाव में बैठकर जा रहा था तो अचानक झील में ऐसा बड़ा तूफान उठा कि नाव डूबने लगी और उसके चेले बहुत घबरा उठे, परन्तु यीशु ने पानी और हवा को ऐसा डांटा कि वे उसी समय थम गए। फिर कुछ और आगे चलकर हम यीशु के बारे में पढ़ते है कि एक रात जब उसके चेले नाव पर बैठकर जा रहे थे तो वे यह देखकर भय के मारे कांप उठे कि झील में पानी के ऊपर चलकर कोई उसकी ओर बढ़ रहा है-और फिर उन्हें यीशु के ये शब्द सुनाई पड़े, कि ''डरो मत, मैं हूं''। फिर अनेक स्थानों पर बाइबल में हम यीशु के बारे में बढ़ते हैं कि उसने हर प्रकार की बीमारी वालों को चंगा किया और यहां तक कि उसने हर प्रकार की बीमारी वालों को चंगा किया और यहां तक कि उसने मरे हुए लोगों को भी जिंदा कर दिया।

परन्तु ये सब काम, अर्थात् ये सब आश्चर्यकर्म यीशु ने क्यों किए?

इन सब कामों को करने से उसका क्या उद्देश्य था? हम सब जो बाइबल के बारे में थोड़ा-बहुत ज्ञान भी रखते है इस बात से परिचित है कि ये सब काम यीशु ने इसलिये किए ताकि लोग उसमें विश्वास लाएं-ताकि लोग उसमें विश्वास करें कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। जगह-जगह हम पढ़ते हैं, कि जब उसने कोई आश्चर्यकर्म किया तो देखने वालों ने उसमें विश्वास किया। अर्थात् यीशु के वे अद्भुत काम इस बात के सबूत थे कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। एक जगह अपने चेलों से बातें करते हुए उसने स्वयं कहा, कि मेरी प्रतीति करो कि मैं परमेश्वर की ओर से हूं; नहीं तो मेरे कामों के ही कारण मेरी प्रतीति करो। (यूहन्ना 14:11)। और फिर यूहन्ना नाम का यीशु का एक चेला; जिसने अपनी पुस्तक में यीशु के बहुत से कामों का वर्णन किया है, अन्त में लिखकर यों कहता है कि, ''यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाएं, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिए लिये गये है, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।'' (यूहन्ना : 20, 30-31)। मान लीजिये, यदि यीशु ऐसे ही लोगों से कहता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है, तो कौन उसमें विश्वास लाता? परन्तु जब उसने पांच रोटियों से पांच हजार लोगों को खाना खिलाया; और आंधी तूफान को डांटकर थाम दिया और जब उसने कोढ़ियों और जन्म से अंधे और लंगड़े लोगों को एक हल्के

से स्पर्श से क्षण भर में चंगा कर दिया; और जो मर गए थे उन्हें फिर से जिंदा कर दिया। तो देखने वालों ने उसमें विश्वास किया और स्वीकार किया कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती 14:33)। इस तरह हम देखते हैं कि यीशु ने पृथ्वी पर जितने भी काम किए वे सब उसने इस उद्देश्य से किए कि उन्हें देखकर लोग उसके ऊपर ईमान लाए।

किन्तु, फिर बाइबल में हम यह भी पढ़ते हैं कि यीशु के चेलों ने भी उसके बाद बड़े-बड़े काम किए। अर्थात् उन्होंने भी यीशु की ही तरह लोगों को भयानक बीमारियों से चंगा किया और मुर्दों को फिर से जिंदा किया। और इसी प्रकार प्रभु के उन चेलों ने जिन लोगों के ऊपर अपने हाथ रखे उन्होंने भी बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म किए। (प्रेरितों 6:1-6; 8:-13)। परन्तु क्यों? बाइबल हमें बताती है कि इन चिन्हों और अद्भुत कामों के द्वारा प्रभु उस समय अपने वचन को दृढ़ करता रहा। (मरकुस 16:20)। जैसा कि अभी मैंने कहा कि जो आश्चर्यकर्म प्रभु यीशु ने किए उनका उद्देश्य यह था कि लोग उनके कारण उसमें विश्वास लाएं। ऐसे ही प्रभु ने उस समय अपने चेलों को भी सामर्थ दी (प्रेरितों 2), कि उसकी मृत्यु और जी उठने और स्वर्ग में वापस उठा लिये जाने के बाद जब वे उसका प्रचार करें तो उनके द्वारा भी अद्भुत काम और चिन्ह और आश्चर्यकर्म प्रगट हो, ताकि उन्हें देखकर लोग उनके प्रचार पर विश्वास लाएं। मान लीजिए, यदि ये चेले यों ही जाकर लोगों में यीशु का प्रचार करने लगते तो कौन उनकी बातों पर विश्वास लाता? लोग उनकी बातों को कथा-कहानियां जानकर हंसी-ठट्ठों में उड़ा देते। परन्तु वचन के प्रचार के साथ-साथ जो आश्चर्यकर्म उनके हाथों से किए जाते थे उन्हें देखकर लोग उनके प्रचार पर विश्वास लाते थे। (प्रेरितों 4:29-31; 5:12-16)। हमें इस बात को भी अवश्य ही ध्यान में रखना चाहिए, कि आरंभ में उन चेलों को आज हमारी तरह बाइबल उपलब्ध नहीं थी। उनके पास सम्पूर्ण बाइबल नहीं थी। आज जब मैं आपके सामने आकर प्रचार करता हूं तो मैं बाइबल में से पढ़कर आप को बताता हूं और आप उसे स्वीकार करते हैं, क्योंकि आप जानते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। परन्तु आरंभ में उन प्रेरितों के पास बाइबल नहीं थी, बाइबल का नया नियम उस समय लिखा जहा रहा था। सो उनके प्रचार को दृढ़ करने के लिये उस समय प्रभु ने उन को यह सामर्थ दी थी कि उनके द्वारा आश्चर्यकर्म प्रगट हो, ताकि लोग उनके कामों को देखकर उनके प्रचार पर विश्वास लाएं।

परन्तु दुख की बात वह है, कि आज बहुतेरे लोग कुछ ऐसे लोगों की प्रतीति कर रहे है जो यह कहते फिरते हैं कि आज हम भी प्रभु यीशु और उसके प्रेरितों के समान आश्चर्यकर्म कर सकते हैं। परन्तु किस उद्देश्य से? आज हमारे पास बाइबल है। हम परमेश्वर के वचन को उसकी पुस्तक में से पढ़कर प्रचार कर सकते है। लोग स्वयं उसे पढ़ सकते हैं, और इस प्रकार उसमें विश्वास ला सकते हैं। (रोमियों 10:17)। आज इसलिये, चिन्ह और आश्चर्यकर्मों की कोई आवश्यकता नहीं है, उनका कोई उद्देश्य नहीं है, और न परमेश्वर ने आज किसी को इस प्रकार

के कार्यों को करने की सामर्थ दी है। (1 कुरिन्थियों 13:8-10; याकूब 1:25)।

परन्तु अब यदि थोड़ी देर के लिये हम यह मान भी लें कि आज पृथ्वी पर ऐसे लोग विद्यमान हैं जो यीशु और उसके प्रेरितों के समान आश्चर्यकर्म कर सकते हैं। तो वे कहा है? क्या आज कोई पांच रोटियों से पांच हजार लोगों को खाना खिला सकता है? क्या आज कोई मुर्दों को जिंदा कर सकता है? क्या आज कोई कोढ़ियों को छुकर चंगा कर सकता है? क्या आज कोई ऐसा मनुष्य है जो जन्म के अंधों और लंगड़ों को चंगा कर सकता है, और जिनके धड़ मारे गए हैं या जिनके हाथ पैर सूख गए है उन्हें फिर से नई जिंदगी दे सकता है? हम जानते हैं कि आज संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं हैं। यीशु ने ये काम किए; उसके प्रेरितों ने ये काम किए; परन्तु आज इस प्रकार का कोई भी काम मनुष्य नहीं कर सकता। फिर आज जो लोग आश्चर्यकर्म करने का दावा करते हैं, उनका दावा केवल चंगाई तक ही सीमित रहता है, अर्थात् वे चंगाई के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते। और यह बात भी विचारपूर्ण है, कि उनकी चंगाई केवल लोगों की अन्दरूनी बीमारी तक ही सीमित रहती है। जबकि यीशु और उसके प्रेरित ऐसे लोगों को चंगा करते थे जो अपाहिज थे, जिनके रोग बाहर और सब लोगों के सामने प्रत्यक्ष थे। अर्थात् कोढ़ी या जिनके हाथ-पांव सूखे हुए थे, या जो जनम से अंधे, लंगड़े और लूले थे। परन्तु आज ऐसा कोई नहीं कर सकता, क्योंकि आज परमेश्वर ने ऐसे कामों को करने की सामर्थ किसी को नहीं दी है। परन्तु धन, प्रसिद्धि और लोकप्रियता प्राप्त करने के दृष्टिकोण से आज उनके लोग सामर्थपूर्ण कार्य करने का दावा कर रहे है। और वे करते है। तो केवल चंगाई, और वह भी ऐसी जिसे अन्य लोग नहीं देख सकते परन्तु केवल पाने वाला ही अनुभव कर सकता है।

मित्रो् आज परमेश्वर किसी भी मनुष्य के द्वारा आश्चर्यकर्म नहीं कर रहा है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह आज ऐसा नहीं कर सकता-परन्तु आज वह नहीं कर रहा है, क्योंकि इस प्रकार के कामों का आज कोई उद्देश्य नहीं है। आरंभ में उसने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचाा था, परन्तु आज वह लोगों को मिट्टी से नहीं बना रहा है। इसलिए नहीं कि वह आज ऐसा कर नहीं सकता, परन्तु इसलिये क्योंकि आज ऐसा करने में कोई उद्देश्य नहीं है।

सो हमें आज ऐसे लोगों से सावधान रहने की आवश्यकता है जो परमेश्वर के वचन को बिगाड़ते है और उसमें मिलावट करते है। (रोमियों 16:17, 18)। मित्रो, प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार बिल्कुल साधारण है। जो कुछ उसने हमारे लिये किया और हमें करने को आज्ञा दी है, वह सब परमेश्वर की पुस्तक पवित्र बाइबल में आज हमारे लिए प्रगट है। इस पुस्तक को पढ़कर आज हम उसमें विश्वास ला सकते है और उसकी आज्ञाओं को मानकर अनन्त जीवन प्राप्त कर सकते है। (यूहन्ना 20:30, 31; 3:36)।

प्रभु अपने वचन के सुननेवालों और उस पर चलने वालों को आशीष दे।

जो बाईबल अनुसार मसीही नहीं है

जे.सी. चोट

बहुत सारे लोग मसीही होने का दावा करते हैं। जो ऐसा दावा करते हैं वे बाइबल अनुसार मसीही नहीं है। इस बात से आप आश्चर्य न करें। क्योंकि यह सच है।

अब कोई सोचे कि मैं मसीही परिवार में जन्मा हूं इसलिये मैं मसीही हूं, परन्तु ऐसा होता नहीं है। कोई भी व्यक्ति जन्म से मसीही नहीं होता। कई धर्मों में ऐसा होता है, कैथोलिक लोगों में भी ऐसा होता है। मसीही लोगों में ऐसा नहीं होता, विशेषकर जो नये नियम अनुसार मसीही है उनमें ऐसा नहीं होता। मसीही परिवार में जनम लेने से कोई मसीही नहीं हो जाता। मसीही बनने के लिये बाइबल अनुसार जन्म लेना पड़ता है। हमें विश्वास करके सुसमाचार का पालन करना पड़ता है। (यूहन्ना 3:3-5)। नया जनम लेने के पश्चात हम कह सकते हैं कि हम मसीही हैं।

अब यह भी हमें समझना चाहिए कि यदि बचपन में हमारे सिर पर जब थोड़ा सा पानी छिड़का गया था तब उससे हम मसीही नहीं बन गये थे। जबकि बपतिस्में का अर्थ छिड़काव नहीं है परन्तु डुबकी है। जब कोई मसीही बनता है तो वह पहले यीशु में विश्वास करके पानी में डुबकी लेता है। यह प्रभु की एक आज्ञा है। (मरकुस 16:16)। हम कुलस्सियों 2:12, तथा प्रेरितों 8 में पढ़ते हैं कि बपतिस्मा जल में गाड़े जाना है। दूसरी बात हम यह देखते हैं कि जो बपतिस्मा ले रहा है वह सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास करता है। (रोमियों 10:10-17)। वह अपने पापों से मन फिराता है। (लूका 13:3) तथा वह यह अंगीकार करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। (मत्ती 10:32)। यह बातें कोई दूसरे के लिये नहीं कर सकता। और विशेष बात यह है कि बच्चे पाप रहित तथा मासूम होते हैं तथा उन्हें बपतिस्में की आवश्यकता नहीं हैं (मत्ती 18:3)। इसलिये बचपन में छिड़काव करने से कोई मसीही नहीं बनता। जब कोई मसीही बनता है तब वह प्रभु को सम्पूर्ण समर्पण कर देता है।

फिर हम देखते हैं कि केवल विश्वास करने से या केवल यह कह देने से कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, कोई मसीही नहीं बन जाता। शैतान भी विश्वास करता है (याकूब 2:18) मसीही बनने से पहले आज्ञा मानना आवश्यक है। (इब्रा. 5:8, 9; 1 पतरस 2:21) आज बहुत से लोग है जो अपने को मसीही कहते है, वे बाइबल अनुसार मसीही नहीं है। मसीही बनने के लिये परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना पड़ता है। बाइबल की शिक्षा द्वारा हम मसीही बनते हैं। बाइबल किसी को भी बैपटिस्ट, मैथोडिस्ट, लूथरन या कैथलिक नहीं बनाती। क्योंकि यह सब साम्प्रदायिक नाम हमें बाइबल में नहीं मिलते। बाइबल में हम केवल मसीही नाम पढ़ते हैं। प्रेरितों

11:26 में हम पढ़ते हैं कि चेले सबसे पहले अन्ताकिया में मसीही कहलाये। बाइबल हमें एक करती है, अलग-अलग नहीं करती। (1 कुरि. 1:10)। क्या आप किसी ऐसी कलीसिया के सदस्य हैं जिसके विषय में हम बाइबल में नहीं पढ़ते। यदि ऐसा है तो आप बाइबल अनुसार मसीही नहीं हैं। यदि कोई मसीही होने के कारण दुख उठाये तो लज्जित न हो। (1 पतरस 4:16)

केवल दावा करने से कोई मसीही नहीं होता। यदि कोई किसी भी तरीके से यह दावा करता है कि वह एक मसीही है तो उसे बाइबल अनुसार इस बात को देखना चाहिए। कई लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम विश्वासी हैं परन्तु वे बाइबल अनुसार मसीही नहीं है। यदि कोई ऐसा दावा करता है तो उसे अपने आप को बाइबल से प्रमाणित करके दिखाना चाहिए।

क्या आप एक मसीही है? क्या आप बाइबल अनुसार मसीही हैं? क्या आपने बाइबल की शिक्षाओं को ठीक से माना है? क्या आप प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य हैं? यदि आप एक मसीही नहीं है तब आपके पास यह सुअवसर हैं कि आप बन सकते हैं।

आप यीशु में विश्वास करें, अपने पापों से मन फिराये। यीशु के नाम का अंगीकार करें कि वह परमेश्वर का पुत्र हैं तथा अपने पापों की क्षमा के लिये जल में बपतिस्मा लें। (प्रेरितों 2:38; 22:16, 1 पतरस 3:21)। जब आप ऐसा करेंगे तब प्रभु आपके पापों को क्षमा करके, आपको अपनी कलीसिया में मिलायेगा। (प्रेरितों 2:47) आप केवल मसीही कहलायेंगे तथा अनन्त जीवन आपका होगा। (रोमियों 6:23. यूहन्ना 14:1-3)।

अगापे-मसीही प्रेम

कॉय रोपर

"प्रेम" के लिए चौथा शब्द अगापे है। नये नियम में "प्रेम" के लिए सबसे पसंदीदा शब्द अगापे है। परमेश्वर के मनुष्य के लिए प्रेम के लिए (उदाहरण के लिए देखें यूहन्ना 3:16)। और उस प्रेम के लिए जो यीशु ने दूसरों के पापों के लिए उस समय दिखाया, जब वह क्रूस पर मरा (उदाहरण के लिए देखें गलातियों 2:20)। मसीही लोगों में ऐसा ही प्रेम होना चाहिए, जब बाइबल एक-दूसरे से प्रेम करना सिखाती है (यूहन्ना 13:34; 1 यूहन्ना 4:7; मत्ती 22:39)। इफिसियों 5:25-33 के अनुसार बाइबल में पतियों को भी अपनी पत्नियों से ऐसा ही प्रेम रखने के लिए कहा गया है:

हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए। और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया

बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो। इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी-अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। इस लिए कि हम उसकी देह के अंग है। ...पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने।

अगापे क्या है

यह अगापे प्रेम क्या है? यह केवल या मुख्यतया भावना है। प्रेम के बदले में कुछ देना भी अनिवार्य नहीं है। यह केवल उन्हीं लिए ही नहीं है, जिन्हें प्रेम की आवश्यकता है। यह अपनी ही सेवा करने वाला प्रेम नहीं है; बल्कि यह तो त्याग करने वाला प्रेम है जो प्रेम करता है और जो प्रियजनो की बेहतरी की खोज में रहता है। इसमें भावनाओं से बढ़कर इच्छा है। इसके लिए आवश्यक नहीं कि जिस मनुष्य से हम प्रेम करें वह प्रेम के योग्य हो।

ऐसे प्रेम का उदाहरण यीशु ने बहुत अच्छी तरह से दिया है। क्या जब यीशु इस संसार के लोगों को बांधने आया तो इस बात का इंतजार किया कि पहले लोग बचाने के लिए काबिल हो जाएं फिर मैं उन्हें बचाऊंगा? नहीं "जब हम पापी ही थे, यीशु हमारे लिए मरा" (रोमियों 5:8)।

प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।

जिसके अंदर ये विशेषताएं हैं, वह प्रेम के योग्य है; जिस कारण ऐसे मनुष्य के साथ रहना आसान होता है। अगर आप चाहते हैं कि आपका वैवाहिक जीवन लंबे समय तक बना रहे तो प्रेम करने वाले व्यक्ति बनें। उदाहरण के लिए हम ऐसे मनुष्य की व्याख्या कैसे करेंगे, जो अपनी पत्नी से ऐसे प्रेम करता हो?

...वह उसके साथ "धीरज" से काम लेगा और उसके प्रति "दयालु" रहेगा। वह "घमण्डी" नहीं रहेगा; उसका उसके प्रति "दुव्यवहार" नहीं होगा (वह नम्र होगा), वह उसके मामले में (अपना) भला नहीं चाहेगा (या स्वार्थी नहीं होगा)। वह उसके मामले में (आसानी से) बुरा नहीं मानेगा। वह उसकी की गई (गलतियों) का हिसाब नहीं रखेगा। (वह उसकी पिछली गलतियों के कारण उससे डाह नहीं रखेगा) वह सब बातें (सह लेगा) किसी भी बात के बावजूद उससे प्रेम करता रहेगा) और वह उसकी सब बातों को (मानेगा) और (शक नहीं करेगा)।

अगापे लम्बे वैवाहिक जीवन की कुंजी है। जब कामुक भावनाएं फीकी पड़ जाती है, जब एक-दूसरे के प्रति कर्त्तव्य निभाने की इच्छा कम हो जाए, जब दोस्ती नामुमकिन सी लगे, तब मसीही प्रेम अर्थात अगापे प्रेम हर हालात में वैवाहिक जीवन को बनाए रखता है। ऐसा प्रेम बना रहता है, "भला हो या बुरा, अमीर हो या गरीब, बीमारी में या तंदुरुस्ती में।" क्यों? क्योंकि जो ऐसा प्रेम करता है वह अपने से अधिक उसकी चिंता करता है, जिसे वह प्रेम करता है। जब दो लोगों के बीच अगापे प्रेम होता है, तो वह अपनी मर्ज़ी को छोड़कर एक-दूसरे को पहल देते हैं।

अगापे क्या करता है: कुछ उदाहरण

अगापे एक प्रकार का प्रेम है, जिसे एक विवाहित स्त्री दिखाती है। अंधे हो चुके अपने पति की सेवा करके जब वह अपना कोई भी काम करने में असमर्थ हो। यह ऐसा प्रेम है, जिसे पति अपनी बीमार पत्नी की सेवा करने के द्वारा दिखाता है। अगापे प्रेम एक मजबूती देता है जब वह अपनी पत्नी की लकवेवाली हालत के बाद जब वह घर का कोई भी काम करने में असमर्थ हो उसकी सेवा करे या पत्नी को अपने अपाहिज पति की सेवा करने की शक्ति प्रदान करता है।

अगापे प्रेम की कमी आदमी को अपनी बीस साल की ब्याहता पत्नी को तलाक देकर कमसिन स्त्री से विवाह करने को प्रेरित करती है। ऐसे प्रेम के बिना पति अपनी इच्छा से अपना रास्ता चुनने की कोशिश करता है या अपनी इच्छानुसार न मिल पाने पर पत्नी अपना क्रोध दिखाती है। जिसमें अगापे प्रेम नहीं बढ़ता वह अपने पति या पत्नी के साथ जिसने उसके साथ किसी भी तरह का बुरा व्यवहार किया हो, वफादारी नहीं दिखाता और इसे वह उचित मानता है।

अगापे कैसे बढ़ता है

ऐसा प्रेम एक चुनौती है। अगापे प्रेम में परमेश्वर अपने लोगों से चाहता है कि वे मानवीय स्वभाव को उतार फैंके अर्थात अपने स्वभाव के अनुसार व्यवहार करने से इंकार करे ओर परमेश्वर के ईश्वरीय स्वभाव को पहन लें और उसके जैसा बने (देखें 2 पतरस 1:4)। परन्तु वह अपने बच्चों को वैसा बनने में मदद करता है जैसा बाइबल में कहा गया है; वह अपने पति या अपनी पत्नी सहित दूसरों से सही ढंग से प्रेम करने की शक्ति देता है। इसके अलावा वह किसी से भी ऐसा प्रेम करने में एक ही रात में सिद्ध होने की अपेक्षा नहीं करता। जैसे यीशु ने दूसरों से प्रेम किया वैसे प्रेम करना सीखना तो जीवन भर की जाने वाली खोज है। उस रास्ते पर तुरन्त चलना आरंभ कर दें, ताकि आप वो बन सके, जिसकी आपको आवश्यकता है- और इससे आपका विवाह सफल रहेगा।

आपका विवाह जीवन भर चल सकता है अगर आपके दिल में अपने साथी के लिए अगापे वाला प्रेम है। अपने विवाह के साथी के साथ एक प्रेमी की तरह

जुड़ें, जिसे आप शारीरिक सुख देकर और शारीरिक सुख लेकर आनन्द प्राप्त करते हैं। याद रखें कि आप दोनों सामाजिक रीति/रिवाज के साथ बंधन में बंधे हैं और इस बंधन को निभाना आपका कर्तव्य है। अपने पति या पत्नी को अपना दोस्त समझें एक अच्छा दोस्त जिसके साथ आपका सब कुछ सांझा है। आपको इसी तरह रहना चाहिए कि आप किसी और की अपेक्षा अपने साथी के साथ अधिक से अधिक समय बिताएं। समझ लें कि आपका साथी एक प्राणी है, जिसे परमेश्वर ने अपने स्वरूप पर बनाया है, जिसके लिए मसीह मरा और यह आपका विशेषाधिकार है कि आप उससे वैसे ही प्रेम करें जैसे मसीह ने आप से किया। अपने आप को न्यौछावर कर देने वाली नि:स्वार्थ भावना से प्रेम करें, जो अपने प्रेमी के लिए सब कुछ उत्तम चाहे कुछ बदले में पाने की इच्छा किए बिना। अगर आप ऐसे प्रेम करेंगे तो आपका वैवाहिक जीवन मरने तक चलता रहेगा।

एच. नॉरमन व्हाइट ने अपनी पुस्तक सो यू आर मैरिड के एक पाठ में बड़ी अच्छी तरह लिखा है, वह कहता है कि विवाह में "प्रेम की वचनबद्धता" सम्मिलित है। जब आप विवाह करते हैं तो आप अपने साथी को वैसा ही प्रेम करने का वचन देते हैं जैसे परमेश्वर हम से करता है, तब तक जब तक आप दोनों इस पृथ्वी पर जीवित हैं।

चरवाहे का भेड़ों और बकरियों को अलग करने का दृष्टांत

(मत्ती 25: 31-46)

आयतें 37-39. धर्मी लोग जिन्हें अपने भले कार्यों के लिए सराहा गया था, पूछने लगे, "हे प्रभु, हमने कब (तेरे लिए यह सब किया)?" यह प्रश्न उन विश्वासियों के लिए विशेषकर उपयुक्त होना था, जिन्होंने प्रभु को देह में कभी नहीं देखा था।

भूख मिटाना, भूखे को खिलाना, प्यासे को पिलाना और नंगे को कपड़े पहनाना मानवीय दयालुता के बुनियादी काम हैं (अय्युब 22:6, 7; नीति. 25:21; यशा. 58:7; यहे. 18.7, 16; 10:42; मर. 9:41; रोमि. 12:20: याकू. 2:15,16)। "नंगा" के लिए "यह जिम्नेजियम" शब्द से संबंधित है, क्योंकि यूनानी लोग पारम्परिक रूप में नंगे व्यायाम करते थे। "बिना ओढ़ने के, नंगा" (मरकुस 14:52) व अपर्याप्त कपड़े पहनने, नंगा, उघाड़ा (याकू. 2:15) या "कम कपड़े पहने, बाहरी वस्त्र के बिना" (यूह. 21:7) हो सकता है। इस संदर्भ में इस शब्द का संकेत सम्भवतया बिना पर्याप्त कपड़े पहनने के लिए हैं; किसी ऐसे व्यक्ति को मिलना बहुत ही कम होगा जिसके पास कोई कपड़ा हो ही न।

प्राचीन काल में परदेशी की मेहमान नवाजी (आतिथी सत्कार) करना एक सामान्य शिष्टाचार था (उत्प. 18:1-8; न्याय. 19:16-21; अय्यू. 31:32; प्रेरि.

10:23; 1 तीमु. 5:10; इब्रा. 13:2; 3 यूह. 5)। यूनानी-रोमी संस्कृति के बाहर घूमने पर जोर देने के प्रभाव से फलस्तीन में बहुत सी सरायें बन गई थीं। परन्तु यह अपने बुरे नाम के लिए प्रसिद्ध थीं, और यहूदियों और मसीही लोगों द्वारा समान रूप से विशेषकर इससे दूर रहा जाता था। यीशु ने लिमिटेड कमीशन पर अपने प्रेरितों को जब भी भेजा, उसने उन्हें सरायों में रहने को नहीं कहा। इसके बजाय उसने उन्हें जिस नगर या गांवों में वे जाते थे, वहां किसी योग्य व्यक्ति को ढूंढ़कर उसके घर रहने की आज्ञा दी थी (मत्ती 10:11)।

बीमारों के साथ-साथ विधवाओं और अनाथों की सुधि लेना (याकू. 1:27) दयालुता का एक और काम था। याकूब ने एक ऐसी स्थिति दिखाई जिसमें एक बीमार मसीही कलीसिया के प्राचीनों यानी ऐल्डरों को बुलाता है। वे उस पर प्रार्थना करें और तेल से उसे अभिषेक करें, जो उसकी चंगाई का संकेत (और शायद इसमें सहायक) था (याकू. 5:14)।

बंदीग्रह में वे विश्वासी थे जिन्हें अन्यायपूर्ण ढंग से दोषी बना दिया गया था (इब्रा. 13:3)। इन कैदियों के प्रति सहानुभूति दिखाना किसी के नाम और स्वतंत्रता के लिए खतरा हो सकता था। बेड़ियों में बंधे कैदियों को सामान्य अपराधी माना जाता था और उनके विश्वासयोग्य मित्रों को भी अपमान की दृष्टि से देखा जाता था, जैसे वे उनके साथ ही दोषी हो। नजरबंद रहते समय पौलुस को उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसका ध्यान रखने वालों से मिलने की अनुमति होती थी (प्रेरि. 24:23; 28:30, 31)।

आयत 40. राजा ने अपने प्रश्न पूछने वालों को यह कहते हुए उत्तर दिया, "तब राजा उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।" यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया था, "जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है" (मत्ती 10:40)।

"मेरे इन भाइयों" वाक्यांश को मसीही लोगों के हवाले से समझा जाना चाहिए। यीशु ने ज़ोर दिया कि जो लोग उसके आज्ञाकारी हैं, वे उसका आत्मिक परिवार हैं (मत्ती 12:49, 50; लूका 8:21)। मसीही लोग एक-दूसरे के लिए जो कुछ भी कर रहे होते हैं, वे मसीह के लिए करते हैं। मसीह की देह अर्थात् कलीसिया की आवश्यकताओं की पूर्ति करके मसीह का सच्चा सेवक बनना साबित किया जाता है (इफि. 1:22, 23)। यीशु यहां केवल दान की बात नहीं कर रहा था। वास्तव में वह अपने चेलों की सहायता के लिए आवश्यकता की बात कर रहा था। जब हम यीशु की बातों को समझ जाते हैं, तो हम देखेंगे, जैसा कि जेम्स बर्टन काफमैन ने कहा था कि "लोग जो कुछ उसकी कलीसिया के लिए करते हैं, वे उसके लिए करते हैं।"

"इन छोटे से छोटे" से स्पष्ट करते हुए यीशु ने अपनी बात पक्की की। आमतौर पर यीशु से अधिक प्रसिद्ध चेलों पर ध्यान दिया जाता है जबकि कम प्रभावी चेलों को नजरअंदाज कर दिया जाता है। "छोटे" मत्ती ने पहले बताए "इन छोटों" जैसे हो सकते हैं (मत्ती 10:42; 18:6, 10, 14)। यीशु के चेलों को निर्बल और नि:सहाय

लोगों के प्रति उसकी करूणा का अनुकरण करना आवश्यक है (देखें मत्ती 11:5; लूका 4:18)।

आयत 41. यहां पर राजा ने अपना ध्यान अपनी बाई ओर दुष्टों (बकरियों) की ओर किया। उसने श्रापित लोगों से कहा, "मेरे सामने से चले जाओ" दण्ड दिया जाना "प्रभु के सामने से दूर" किया जाना (2 थिम्स. 1:9), अर्थात उसकी संगति से दूर होना है।

दुष्टों को अनन्त आग में अर्थात नरक में फेक दिया जाएगा। "अनन्त" "बिना अन्त के, कभी खत्म न होना, सदा तक रहना।" अधर्मी लोग नरक में तब तक रहेंगे, जब तक धर्मी लोग स्वर्ग में रहेंगे। यीशु ने कहा कि आग अनन्त है। पहले उसने नरक को "कभी न बुझने वाली आग, ..." बताया था, जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती (मरकुस 9:43, 48)।

आयतें 42, 43. दुष्टों को "शुद्ध और निर्मल" मसीहियत के व्यवहार को नजरअंदाज करने के कारण दण्ड दिया गया (देखें याकूब 1:27)। उन्होंने उनकी सेवा नहीं की जिनकी धर्मियों ने की थी: भूखे, प्यासे, परदेशी, नंगे, बीमार और बंदीगृह में थे (मत्ती 25:35, 36)। ये व्यभिचार, मतवालेपन, झूठ बोलने और चोरी करने जैसी चूक के बजाय भूल के पाप थे। (1 कुरि. 6:9, 10)। याकूब ने लिखा है "इसलिए जो कोई भलाई करना चाहता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है" (याकूब 4:17)।

आयत 44. दण्ड पाने वालों ने जब राजा के शब्द सुने तो वे पूछने लगे, "हे प्रभु, हम ने तुझे कब (इन वस्तुओं की आवश्यकता में) देखा, और (तेरी सेवा न कर पाए)?" चाहे संक्षेप में ही था पर उनका प्रश्न धर्मियों द्वारा पूछे गए प्रश्न का ही प्रतिबिम्ब था (मत्ती 25:37-39)।

आयत 45. अपने पिछले उत्तर के साथ मेल खाते हुए (25:40) राजा ने उत्तर दिया, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम ने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।" प्रभु की देह की उचित आवश्यकताओं को पूरा न कर पाने का अर्थ उसकी सेवा न कर पाना है।

इस दृष्टांत में उनको दिए गए दण्ड का कारण हमारे प्रभु के पास बिल्कुल स्पष्ट है। हमारा उद्धार हमारे भले कार्यों के द्वारा नहीं हुआ है, परन्तु हमारा उद्धार उनके बिना नहीं हो सकता है। वे इस बात का प्रमाण हैं कि हमारा विश्वास सच्चा है (याकू. 2514-26)।

आयात 46. राजा ने बात खत्म की, "यह अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" नये नियम में प्रवेश करेंगे।" नये नियम में यहां "अनन्त दण्ड" शब्द का केवल एक बार इस्तेमाल हुआ है।

दण्ड पाने वालों के विपरीत धर्मियों को "अनन्त जीवन" में प्रवेश करवाया जाएगा। "अनन्त दण्ड" के विपरीत नये नियम में यह शब्द बार-बार, विशेषकर यूहन्ना के लेखों में मिलता है।

"क्या तू सचमुच चंगा होना चाहता है"

यूहन्ना 5 अध्याय में यीशु ने एक अजीब प्रश्न पूछा था। यीशु ने एक बीमार आदमी से पूछा था, "क्या तू चंगा होना चाहता है?" (आयत 6)। आयत 5 से पता चलता है कि यह आदमी पिछले अड़तीस वर्ष से बीमार था। इसी कारण से यीशु ने उससे पूछा था कि क्या तू सचमुच चंगा होना चाहता है?

पहली नज़र में यह प्रश्न बिल्कुल वैसे ही बेतुका सा लगता है, जैसे कई बार एक्सिडेंट हो जाने के बाद पूछा जाता है। एक आदमी बिल्कुल पिचकी हुई एक कार के पास जाता है। कार में एक आदमी है, जिसकी हालत बहुत नाजुक है। उसके सिर पर लगी चोटों में से खून बह रहा है, उसकी हड्डियां टूट कर कपड़ों में से बाहर आ गई हैं। वह आदमी उससे पूछता है, "तुम्हें कहीं चोट तो नहीं लगी?" एक स्त्री अस्पताल की ओर भागती जा रही है। उसके एक साथी के सिर से पैरों तक पट्टियां बंधी हुई हैं। इसी कारण उसकी शक्ल बिगड़ गई हैं, उसके शरीर में बहुत सारी नलियां लगी हुई हैं। और वह अपने घायल साथी से पूछती है, "तकलीफ ज्यादा तो नहीं है?"

इस उदाहरण को निजी बनाने के लिए, मान लें कि आपकी तबीयत बड़ी खराब है और कोई आ कर आपसे पूछता है, "तुम चंगा होना चाहते हो?" या मान लें कि कोई किसी ऐसे व्यक्ति का नाम लेता है जिसके साथ आपकी नाराजगी थी, तो पूछता है, "तुम उसके साथ सुलह करना चाहते हो?" या मान लें कि आपकी पत्नी के साथ या परिवार में कोई गड़बड़ है और कोई आप से पूछता है, "क्या आप अपनी पत्नी के साथ या परिवार के साथ सुलह करना चाहते हैं?" या आप किसी अपराध के बोझ तले दबे हैं और कोई आप से पूछता है, "आप इससे छुटकारा पाना चाहते हैं?"

आपकी पहली प्रतिक्रिया शायद यही होगी, "कितना अजीब प्रश्न है। भला इसमें कौन सी पूछने वाली बात है कि मैं चंगा होना चाहता हूँ (या लोगों के साथ या अपनी पत्नी के साथ या अपने परिवार के साथ मधुर सम्बंध चाहता हूँ या पाप से छुटकारा चाहता हूँ)? यह पूछना ही बेतुका सा लगता है।" हम सब यही चाहते हैं।

यूहन्ना 5:1-16 का अध्ययन करते हुए इन प्रश्नों को ध्यान में रखें।

यीशु ने गलील में अपनी सेवकाई आरंभ कर दी थी। इस सेवकाई की एक विशेष बात बीमारों की चंगाई थी। लोगों को वचन बताते हुए यीशु उन्हें चंगा भी करता था, जिससे दो बातें हुई:

(1) भीड़ इक्ट्ठी होने लगी और (2) विरोध बढ़ने लगा था। इस पाठ में हम चंगाई की एक घटना तथा उससे उठने वाले विरोध का अध्ययन करेंगे। इस कहानी को पढ़ते हुए हम यीशु द्वारा पूछे गए अजीब प्रश्न, "क्या तू चंगा होना चाहता है?" पर विचार करेंगे।

यीशु ने तालाब के किनारे एक आदमी को चंगा किया था। पहले बैतसेदा के

तालाब के पास आदमी को चंगाई मिलती हुई देखते हैं। मैं यह सुझाव देना चाहूंगा कि असल में यह तिहरी चंगाई थी।

(1) देह की चंगाई

अध्याय 5 आरंभ होता है, "इन बातों के पीछे यहुदियों का एक पर्व हुआ और यीशु यरूशलेम को गया" (आयत 1)। क्योंकि "पर्व" के बजाय यह "एक पर्व" था, जिसका अर्थ यहूदियों के छोटे त्योहारों में से कोई हो सकता है, जिसमें भाग लेना यहूदी पुरुषों के लिए अनिवार्य नहीं था। आज के कुछ लोगों के विपरीत जो आराधना में अनिवार्य होने पर ही जाते हैं, यीशु को आराधना में जाना अच्छा लगता था।

"यरुशलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड है, जो इब्रानी भाषा में बैतसेदा कहलाता है, और उसके पांच ओसारे हैं" (आयत 2)। मूल धर्मशास्त्र में "भेड़ों की वस्तु के पास" है। "भेड़ों की वस्तु" सम्भवतया भेड़ों का फाटक था, जिसमें से बलि की जाने वाली भेड़ों को ले जाया जाता था।

जिस तालाब का उल्लेख यहां है, वह आज भी है। "बैतसदा" का अर्थ "करूणा का स्थान" है। "पांच ओसारे" तालाब के किनारे काफी चौड़ी जगह थी।

अगला दृश्य कंपकंपी लगा देने वाला है: "उन (ओसारों) में बहुत से बीमार, अंधे, लंगड़े और सूखे अंग वाले पड़ रहते थे" (आयात 3)। वहां से आती दुर्गंध सिर चकरा देने वाली होती थी और दृश्य ही परेशान करने वाला होगा। अलग-अलग तरह के बीमार उनका चिल्लाना, वहां की दुर्गंध, कमजोर दिल का आदमी तो वहां ठहर भी नहीं सकता होगा।

रोगी पानी के हिलने की आशा में पड़े रहते थे क्योंकि तय समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे। पानी हिलाते ही जो कोई पहले उतरता था वह चंगा हो जता था, चाहे उसे कोई भी बीमारी क्यों न हो (आयतें 3क, 4)।

स्पष्ट रूप से यह व्याख्या मूल धर्म शास्त्र में नहीं थी, परन्तु एक प्राचीन शास्त्री की व्यवस्था में थी, जिसे बाइबल में लिख दिया गया। इन शब्दों में एक पुराने अंधविश्वास का पता चलता है, जिस कारण लोग इस जगह पर आते थे (देखें आयत 7(। इस तालाब के बारे में जो बैतसेदा के नाम से प्रसिद्ध था, कहा जाता है कि इसके तल के नीचे पानी के सोते हैं। समय-समय पर पानी के बुलबुले ऊपर उठते होंगे। स्पष्टतया लोग पानी के इस प्रकार हिलने को स्वर्गदूतों द्वारा हिलाया जाना मानते थे। "करूणा का स्थान" है। "पांच ओसारे" तालाब के किनारे काफी चौड़ी जगह थी।

अगला दृश्य कंपकंपी लगा देने वाला है: "उन (ओसारों) में बहुत से बीमार, अंधे, लंगड़े और सूखे अंग वाले पड़े रहते थे" (आयात 3)। वहां से आती दुर्गंध सिर चकरा देने वाली होती थी और दृश्य बहुत ही परेशान करने वाला होगा। अलग-अलग तरह के बीमार, उनका चिल्लाना, वहां की दुर्गंध, कमजोर दिल का आदमी तो वहां ठहर भी नहीं सकता होगा।

रोगी पानी के हिलने की आशा में पड़े रहते थे क्योंकि तय समय पर परमेश्वर

के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे। पानी हिलते ही जो कोई पहले उतरता था वह चंगा हो जाता था, चाहे उसे कोई भी बीमारी क्यों न हो (आयतें 3क, 4)।

स्पष्ट रूप से यह व्याख्या मूल धर्म शास्त्र में नहीं थी, परन्तु एक प्राचीन शास्त्री की व्यवस्था में थी, जिसे बाइबल में लिख दिया गया। इन शब्दों में एक पुराने अंधविश्वास का पता चलता है, जिस कारण लोग इस जगह पर आते थे (देखें आयत 7)। इस तालाब के बारे में जो बैतसेदा के नाम से प्रसिद्ध था, कहा जाता है कि इसके तल के नीचे पानी के सोते हैं। समय-समय पर पानी के बुलबुले ऊपर उठते होंगे। स्पष्टतया लोग पानी के इस प्रकार हिलने को स्वर्गदूतों द्वारा हिलाया जाना मानते थे।

....और वहां एक मनुष्य था, जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा था" (आयत 5)। यह कहना गलत नहीं होगा कि पूरा जीवन नहीं तो अपने आधे जीवन का अधिकतर समय वह व्यक्ति बीमार ही रहा था। जैसा कि हम आयत 7 में देखेंगे कि वह शारीरिक रूप से असमर्थ था और स्वयं पानी में नहीं उतर सकता था। शायद कमज़ोर, अपंग या लकवे से ग्रस्त था।

आयत 6 यही पृष्ठभूमि बताती है: "यीशु ने उसे पड़े हुए देखकर और जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा है, उससे पूछा क्या तू चंगा होना चाहता है?" यीशु इस कुण्ड पर जहां बहुत सारे बीमार लोग पड़े रहते थे, किसी विशेष उद्देश्य से आया था। यह स्पष्ट है कि वह नगर के दार्शनिक स्थलों को देखने नहीं आया था। बेशक, लोगों के प्रति करूणा ने उसे यहां आने के लिए प्रेरित किया था।

कुण्ड पर पहुंच कर यीशु ने अड़तीस वर्ष से वहां बीमार पड़े आदमी को देखा। यीशु ने इस मनुष्य को चंगा करने का निर्णय क्यों लिया? स्पष्टतया वहां इतने बीमार पड़े लोगों में से यीशु ने इसे ही चंगा किया।

क्या उससे केवल इसलिए चंगा किया ताकि हर कोई देख कर कह सके कि वह सचमुच चंगा हुआ है? या इसलिए कि वह बिल्कुल निराश था और यीशु निराश लोगों की आशा, बेसहारों का सहारा था? या इसलिए कि उसका कोई साथी नहीं था (आयत 7) और यीशु मित्रहीन लोगों का मित्र था? (यीशु शायद उस बालक की तरह है, जिसे पिल्लों के झुण्ड में से एक पिल्ला उठाने के लिए कहा गया तो उसने सबसे छोटा पिल्ला उठाया, जिसे बड़े और शक्तिशाली पिल्ले इधर-उधर धकेल रहे थे)।

जो भी कारण हो, यीशु ने यह जानकर कि "वह बहुत लम्बे समय से बीमार है" (पूरे अड़तीस साल से) उसकी ओर दृष्टि की ओर पूछा, "क्या तू चंगा होना चाहता है?"

आइए ज़रा रूककर इस प्रश्न पर विचार करें। यीशु ने यह अजीब प्रश्न क्यों पूछा? अड़तीस वर्ष बीमार रहना परेशानी की बात तो है, परन्तु दूसरी ओर उसे काफ़ी आसानी भी थी। कोई उसे हर रोज इस कुण्ड के किनारे छोड़ देता होगा। दिन भर वह बिना किसी जिम्मेदारी के वहां पड़ा रहता होगा। उसने भीख मांग कर कुछ पैसे भी जमा किए होंगे। उसके लिए निर्णय कोई और लेता था जबकि काम कोई और

करता था। शायद उसने हालात से समझौता कर लिया था और अब इसी तरह जीने का मन बना लिया था।

दूसरी ओर, यदि वह अचानक चंगा हो जाता है तो क्या होना था? उसे निर्वाह के लिए काम करना पड़ता। अड़तीस साल तक कुछ न करने के कारण अर्थात बिना कोई काम सीखे नौकरी ढूंढ़ने में उसे कितनी परेशानी होती। उसे जिम्मेदारी और जवाबदेही भी झेलनी पड़ती। उसे काम-धंधा करना पड़ता, प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती तथा स्वयं निर्णय लेना पड़ता। इसके साथ उसे असफल होने की संभावना भी सहनी थी।

यीशु उससे पूछ रहा था कि क्या "तू सचमुच में चाहता है कि चंगा हो जाएं? तू चंगा होने को तैयार हैं?" बीमार होना कई लोगों को रास आ जाता है। आपने एक पुरानी कहावत सुनी होगी, फलां व्यक्ति को तो "बीमारी रास आ गयी है।" कइयों को तो बीमार पड़ना अच्छा लगता है। कइयों को तो काम न करने का बहाना मिल जाता है। कई अपनी बीमारी का इसतेमाल दूसरों को उंगलियों पर नचाने और घुमाने के लिए करते हैं।

आज आपको यीशु का यह प्रश्न इतना अजीब नहीं लगेगा।

एक सम्माननीय प्रतिष्ठा

(2 कुरिन्थियों 8:1-9:15)

जेम्स थॉम्पसन

"इम इस बात में चौकस रहते हैं, कि इस उदारता के काम के विषय में जिस की सेवा हम करते हैं, कोई हम पर दोष न लगाने पाए।" (8:20)।

आज स्थानीय मण्डली के जीवन में कलीसिया के वित्तों की कोई भी परिचर्चा में दो संभावित उत्तरों में से एक मिलना संभव है। एक उत्तर में हमें उस पर जो धन के लिए कलीसिया की निरंतर विनितयां माना जाता है, नाराजगी सुनाई दे सकती है। दूसरा उत्तर नाराजगी से अधिक उकताहाट को दर्शाता है। इस विचार के अनुसार बजट की कोई भी सार्वजनिक परिचर्चा ऐसी चीज है जिससे बचना चाहिए और कलीसिया के अधिक महत्वपूर्ण कामों में अनावश्यक घुसपैठ। कलीसिया के वित्त की किसी भी चर्चा के लिए दोनों प्रतिक्रियाओं के पीछे एक अनकही मान्यता है कि जहां तक हो सके कलीसिया के वित्तीय समपर्ण उनके लिए जो ऐसे धन और बजट जैसे सांसारिक मामलों में दिलचसपी लेने वालों के लिए हानि रहित मोड़ हैं। इस विचार के अनुसार धन और बजट का कलीसिया की सेवकाई से कोई लेना-देना नहीं है।

2 कुरिन्थियों, अर्थात् पौलुस की सेवकोई के बचाव के लिए मुख्य रूप में समर्पित पत्री में चंदे पर दो अध्याय हैं। चंदा स्पष्टतया पौलुस की पूरी सेवकाई कि सबसे आवश्यक सर्म्पणों में से एक था। अपनी सेवकाई के आरंभ में उसने यरूशलेम के मसीह लोगों में पाए जाने वाले निर्धनों के लिए धन इकट्ठा करने के लिए अपने

आप को दिया था (गलातियों 2:10)। फिर उसने कुरिन्थियों के नाम अपने पहले पत्र में संक्षेप में चंदे की बात की (16:1, 2)। बाद में अपने जीवन के मोड़ में रोमियों के नाम पत्र लिखते समय (रोमियों 15:22-29) कई साल बीत चुके थे। और चंदा अभी यरूशलेम में नहीं दिया गया था परन्तु पौलुस ने इसे देने की बात छोड़ी नहीं थी क्योंकि उसके जीवन के मुख्य कार्यों में से एक था। वह यरूशलेम में चंदा लाने में अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा भी दाव पर लगाने को तैयार था।

वह चंदा इक्ट्ठा करने में जिसमें उसकी दिलचस्पी थी पौलुस को कई साल लग गए थे। स्पष्टतया अकाल राहत से कहीं बढ़कर थी। अन्यजाति कलीसियाओं की ओर यहूदी कलीसियाओं के लाभ के लिए आने वाला धन कलीसिया की एकता को दर्शाने के लिए था। यह कलीसियाओं के बलिदान, प्रेम और प्राथमिकताओं को दर्शाता था। पौलुस किसी भी प्रकार से धन की बात करने से हिचकिचाता नहीं था, क्योंकि उसे मालूम था कि धन हमें यानी हमारे परिश्रम और प्रेम को दिखाता है। अपने धन को खर्च करने का ढंग इस बात का संकेत हैं कि हमारे लिए जीवन में चीज़ों का क्या महत्व है। यदि अन्य जाति कलीसियाएं यरूशलेम की घरेलू कलीसियाओं के लिए बलिदान कर सकती है तो वे उनकी भलाई की चिंता का स्पष्ट संदेश भेज रही हैं।

2 कुरिन्थियों में आर्थिक सहायता के लिए जोरदार अपील विशेषतया ध्यान देने योग्य हैं क्योंकि पुस्तक का अधिकतर भाग यह सुझाव देता है कि पौलुस की निष्ठा पर सवाल किया जाता है। कइयों ने इसे संदेहास्पद माना था कि पौलुस ने कुरिन्थियों से अपने काम के लिए धन स्वीकार किया है (11:7-11)। उसने कुरिन्थियों पर बोझ डालने के बजाय अन्य कलीसियाओं पर जरूरत के समय निर्भर स्वयं चुना था (11:9)। तौभी उसके लिए धन की बात करने का एक समय आया। पहली अपील किए जाने के बाद एक साल बीत चुका था (8:10)। अध्याय 8 और 9 में वह अपने लिए अपील नहीं करता परन्तु अपने जीवन के बड़े कार्य के लिए करता है। शायद अब वह विषय में लौट आता है क्योंकि उसे विश्वास हो जाता है कि उसके लिए भरोसा बहाल हो गया है कि वह कुरिन्थियों से धन मांग सके। चंदा, उगाही ओर हिसाब रखना यह ऐसी चीजें हैं जिन्हें हम आमतौर पर उकताने वाले और अनावश्यक मानते हैं पर उसकी सेवकाई के लिए आवश्यक थे।

आदर्श कलीसिया (8:1-6)

आमतौर पर हमें उपयुक्त नमूने रखने का लाभ मिलता है। मसीहो लोग कई बार मसीही सेवकाई के नमूनों के रूप सेवा करते हैं ओर सेवा के अर्थ को गंभीरता देते हैं। इसी प्रकार से पूरी मण्डली प्रामाणिक सेवा को चुनौती दे सकती है। यह हमें दिखा सकती है। यह हमें दिखा सकती है कि हमारे लिए कौन सी सेवकाई संभव है और हमें बेहतर सेवा के लिए उत्तेजित कर सकती है। 8:1-6 में मकिदुनिया की कलीसिया कुरिन्थियों के लिए (तुलना रोमियों 15:26) उदारता का नमूना है (8:2)। दूसरी हर कलीसिया की तरह उन्होंने "दुख की परीक्षा" को झेला था (तुलना 1:7; 1 थिस्सलुनीकियां 1:6; 2:14)। मकदुनियों को जिस बात ने अलग किया वह यह थी कि उन्होंने परीक्षा शानदार ढंग से पास की थी।

मकिदुनिया की कलीसिया भी समकालीन मण्डली के लिए उपयुक्त नमूना देती है। हम उनके समर्पण "उन के बड़े आनन्द और भारी कंगालपन के बढ़ जाने से उनकी उदारता बहुत बढ़" (8:2) जाने पर सबसे प्रभावित होते हैं, उन्होंने "सामर्थ से भी बाहर मन से दिया" (8:3)। हम इस पर चकित होते हैं कि उदारता से देने के लिए किसी समृद्ध कलीसिया को कैसे प्रेरित किया जाए। अपने भारी कंगालपन में उदारता से देने वाली मण्डली पर स्वाभाविक रूप से चकित होते हैं। कुछ लोगों का सुझाव है कि मकिदुनिया के मसीही लोगों की निर्धनता, उनके मसीही वचनबद्धता का परिणाम था। उस बात में जो तर्कसंगत रूप में समृद्ध थी, वे निर्धन थे। संभतवया अपने मसीही समर्पण के कारण उनमें से कइयों की नौकरी चली गई होगी और कइयों के आमदनी के साधन जाते रहे होंगे। तो भी वे देने में उदार थे।

"उदारता" के लिए पौलुस के शब्द का अर्थ मूलतया "सीधाई" है। यह शब्द उसके "मन की सीधाई" का सुझाव देता है जिसका उद्देश्य मिला-जुला न हो (कुलस्सियों 3:22; इफिसियों 6:5)। धन देने के लिए इस्तेमाल किए जाने पर यह उसकी "उदारता" का सुझाव देता है जो केवल एक प्राथमिकता को समझता है (रोमियों 12:8)। यह शब्द संकेत देता है कि मकिदुनी लोग अपने भारी कंगालपन से उदारता से क्यों दे पाए, उनके "मन की सीधाई" का अर्थ है कि उनकी प्राथमिकताएं बंटी नहीं थी। उनके समर्पण कलीसिया के काम और अन्य कामों में बंटे नहीं थे। उनका धन देना उनके जीवनों की प्राथमिकता की झलक देता था। इस कारण मकिदुनी लोग हमारे लिए आदर्श हैं और यह याद दिलाने वाले कि उदारता से देना लक्ष्य को मन में रखकर ही हो सकता है। जिनका ध्यान हर नये भौतिक लाभ के साथ बने रहने और मसीही के कार्य के लिए अपने समर्पण में बंट जाता है, उन्हें उदारता से देना असंभव लगेगा, चाहे वे कितनी भी समृद्ध न हो। "मन की सीधाई" से देने वाले लोग अपने कंगालपन में भी देंगे।

मुझे लगता है कि हमारा जोश पूर्ण ढंग से न दे पाना इस तथ्य के कारण है कि हम बजटों, कार्यक्रमों, कर्ज में डूबे होने और वित्तीय दायित्वों की बात ऐसे करते हैं जैसे हम किसी वित्तीय सौदे की बात कर रहे हों। इस भाषा से हमें कलीसिया के वित्तों को "वचन से बाहर" मामलों के रूप में विचार करने लगते हैं। इस पर हम आरंभिक कलीसिया से कीमती सबक सीख सकते हैं, क्योंकि आरंभिक मसीही अपने चंदा देने को बताने के लिए कभी सामान्य वित्तीय भाषा का इस्तेमाल नहीं करते थे। ये विशेषकर प्रभावशाली है कि मकिदुनियों ने "पवित्र लोगों की सेवा में भागी होने की विनती की" (8:4)। "पवित्र लोगों की इस सेवा में साझी होने का सौभाग्य" हुआ है। चंदा केवल वित्तीय जिम्मेदारी नहीं थी बल्कि इसमें "पवित्र लोगों की सेवा" शामिल थी।

"सेवकाई नये नियम में एक महत्वपूर्ण शब्द था। मूल में यह शब्द आत्मलज्जा के कार्य के लिए अर्थात मेज पर प्रतीक्षा करने और भोजन खिलाने के लिए था। इसमें अपने स्वामी के लिए जीने वाले घरेलू नौकर की तरह दूसरों के लिए जीना शामिल है। यीशु ने दूसरों के सेवक के रूप में आकर (मत्ती 20:28) और यह मांग करके

कि उसके चेले एक-दूसरे की सेवा करें (लूका 22:26) इस शब्द को सम्मान दे दिया। उसके चेलों की पहचान अर्थात एक-दूसरे को बनाने की निस्वार्थ सेवकाई होना था। सेवकाई दूसरों की प्रेम पूर्वक सेवा है (तुलना 1 कुरिन्थियों 16:15; इब्रानियों 6:10; फिलेमोन 13; 2 तीमुथियुस 1:18)।

नये नियम के अनुसार सेवकाई के कई ढंग हैं। "सेवकाई का काम" पूरी कलीसिया का काम है (इफिसियों 4:12)। पौलुस कहता है, "सेवा कई प्रकार की है, परन्तु प्रभु एक ही है" (1 कुरिन्थियों 12:5)। एक महत्वपूर्ण सेवकाई धन का योगदान है। जब मकिदुनियों ने यरूशलेम की सहायता करने में भाग लेना चाहा, तो उन्होंने एक सेवकाई को देखा जो कलीसिया को बनाएगी। जब पौलुस ने यरूशलेम के लिए चंदा लिया तो वह पवित्र लोगों की सेवा के लिए लिया गया (रोमियों 15:25)। सेवकाई के कई रूप हैं जिनमें हम दिखाते हैं कि हम अपने लिए नहीं जीते (5:15)। चंदा उन कई ढंगों में से एक होना चाहिए, जिसमें हम दिखाते हैं कि हमने अपने आप मकिदुनियों की तरह प्रभु को दे दिया है (8:5)।

यदि हम चंदा देने में सहभागिता करके "सेवकाई कर रहे" हैं तो कलीसिया के लिए इस तथ्य को नजर अंदाज न करने का कारण है कि हर सेवकाई किसी न किसी प्रकार दूसरों की सेवा के लिए है। हम किसी प्रकार के नये कीर्तिमान स्थापित करने या अपने स्मरण चिन्ह् बनवाने के लिए योगदान नहीं देते। हर सेवकाई उसके काम को आगे बढ़ाने की मंशा से है जिसने दूसरों के लिए अपने-आप को दे दिया। हम में से कइयों को इस बात की समझ है कि हमारी अनिवार्य सेवकाई आपदा राहत के लिए विशेष योगदान के लिए, हमारे बच्चों को सिखाने के लिए सामग्री और स्टाफ के लिए मिशनरी कार्य के लिए "अपने आप को देने" के हमारे समर्पण से आरंभ होती है। मकिदुनियों की तरह हमारे पास न केवल कार्यक्रमों, कमेटियों और बजट की रिपोर्टों में भाग लेने बल्कि रोमांचकारी सेवकाइयों में भाग लेने की संभावना भी है।

प्रेम का प्रमाण (8:7-15)

मकिदुनियों ने यह दिखाकर कि उन्होंने अपने आप को प्रभु को दे दिया है (8:5) अपनी परीक्षा पास कर ली थी (तुलना 8:2)। पौलुस अब कुरिन्थियों की ओर उनके प्रेम का "प्रमाण" देने को मुड़ता है (तुलना 8:7, 8)। "मैं तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को दूसरों की ईमानदारी से तुलना करके परखना चाहता हूं।" गहरी श्रद्धा और लगाव का दावा करना ही काफी नहीं होना क्योंकि प्रेम की परख हमेशा दूसरों के लिए बलिदान करने की हमारी इच्छा से होती है। यह कपट पूर्ण हो सकता है (रोमियों 12:9)। पौलुस ने अपनी कई फेरियों, पत्रों और रातों की नींदे उड़ने में कुरिन्थियों के लिए अपने प्रेम को पहले ही दिखा दिया था (तुलना 2:4; 6:6)। मसीह ने हमें धनी बनाने के लिए "हमारी खातिर" अपनी संपत्ति त्याग कर अपने प्रेम को दिखा दिया था (8:9)। सच्चा प्रेम दूसरों की सेवा करने के वास्तविक कामों में दिखाई देता है। इसी कारण पौलुस कहता है, "सो अपना प्रेम और हमारा वह घमण्ड जो तुम्हारे विषय में है कलीसियाओं के सामने उन्हें सिद्ध करके दिखाओ" (8:24)।

कलीसिया के लिए सेवकाई के लिए अच्छा नमूना होना अच्छा है, जैसे कुरिन्थियों के पास मकिदुनियों का नमूना था। परन्तु कई बार प्रदर्शन के द्वारा कि हमारा प्रेम कपटपूर्ण नहीं है नमूना बना जाता है।

जब हम कुरिन्थियों को दी गई पौलुस की चेतावनी को पढ़ते हैं तो अपने आपको उनसे मिला सकते हैं। हम में से कई लोगों ने प्रेम पूर्वक सेवा में दूसरों के लिए अपने आपको खाली करके मकिदुनियों की तरह "परीक्षा पास" नहीं की है। अपनी कई बहसों के दौरान कुरिन्थियों को यह साबित करने की चुनौति दी जा रही थी कि वे कलीसिया के उद्देश्य को याद रखें। सदियों से बहुत कम कलीसियाएं इतनी महान रही हैं जिन्होंने यह याद रखा कि उनका काम दूसरों की खातिर "निर्धन बनने" के यीशु के नमूने का पालन करना है। लोगों की तरह कलीसियाएं भी "अपने लिए नाम कमाने" और शक्ति और प्रभाव के इस्तेमाल के प्रलोभन में पड़ती हैं। कई बार कलीसिया सामाजिक क्लब से मिलती-जुलती होती है, जो केवल मनोरंजन करने और अपने लोगों को सुविधाजनक स्थान देने के लिए होती है। कुरिन्थियों की तरह हमारे सामने भी वह परीक्षा है जिसे कई कलीसियाएं पास नहीं कर पाई। हम इस परीक्षा को तभी पास करते हैं जब हम दूसरों के लिए प्रेम पूर्वक की गई उस सेवा को जो हमारी खातिर "निर्धन बनकर" यीशु ने दिखाई, मण्डली के अपने जीवन में दोहराते हैं।

पीछे को और आगे को देखना

डेविड रोपर

इब्रानियों की पुस्तक में हम यीशु की याजकाई की श्रेष्ठता पर लेखक की चर्चा के केन्द्र में हैं। अध्याय 5 से 7 में लेखक ने मसीहियत की महा याजकाई के अधिकारी अर्थात यीशु की चर्चा की। अध्याय 9 और 10 में उसने मसीहियत की महा याजकाई की सेवा की चर्चा की। अध्याय 8 परिवर्तन का अध्याय है। यह पीछे को देखते हुए पहले भाग को समेट देता है। यह आगे को देखते हुए दूसरे भाग का परिचय भी देता है।

पीछे को देखना (8:1)

कल्पना करें कि आप कई रातों तक एक लम्बे समय तक किसी समूह को एक कहानी बता रहे हैं। प्रत्येक रात आप पिछली रातों की समीक्षा के साथ आरंभ करेंगे: "पिछली बार हमने कहानी में देखा था।" इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने अध्याय 8 का आरंभ इसी प्रकार से किया। "अब उन बातों का जो हम कह रहे हैं, का सार यह है।"

अध्याय 7 में लेखक ने यह समझाते हुए कि यीशु उत्तम महायाजक क्यों है एक तर्क दिया है। ये सभी तर्क 8:1 में "ऐसा" शब्द में है: "हमारा ऐसा महायाजक है।" यानी हमारा ऐसा महायाजक है जैसे महा याजक की बात अध्याय 7 में की गई

है। अध्याय 8 के आरंभ में लेखक ने अपने तर्कों को चरम दिया। यीशु उत्तम महायाजक है (1) क्योंकि वह शाही महायाजक है और (2) क्योंकि वह स्वर्ग में सेवा करता है।

हमारे लिए, आयत 1 में सबसे महत्वपूर्ण शब्द शायद "है" है: "हमारा ऐसा महायाजक है।" यहूदियों के महायाजक होते थे यानी 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश तक के बाद महायाजक होते थे, परन्तु हमारा महायाजक है (वर्तमान काल)। हमारा महायाजक हमेशा रहेगा। इसलिए हमारी पहुंच परमेश्वर तक सदा रहेगी।

आगे को देखना (8:2-7)

तम्बू (8:2-6क)

आयत 2 से आरम्भ करते हुए लेखक ने समझाया कि मसीही लोगों के पास एक उत्तम तम्बू है। उसकी विचारधारा कुछ इस प्रकार से आगे बढ़ती है:

(1) महायाजक के पास भेंट चढ़ाने को कुछ और भेंट चढ़ने की कोई जगह होनी आवश्यक है (आयत 3)। यीशु द्वारा चढ़ाई गई "कोई चीज" का वर्णन 7:27 में है और बाद में हम उस पर चर्चा करेंगे। इस संदर्भ में लेखक को स्थान की अधिक चिंता थी।

(2) यीशु पृथ्वी पर दो कारणों से बलिदान नहीं चढ़ा सकता था: वह पृथ्वी पर नहीं था (आयत 1) और पृथ्वी पर याजक पहले ही वह काम कर रहे थे (आयत 4)।

(3) परन्तु वह स्वर्ग में बलिदान चढ़ा सकता था। उसका तम्बू वहां पर है (आयतें 1, 2)।

(4) स्वर्गीय तम्बू कई कारणों से मूसा द्वारा तम्बू (मन्दिर) से बहुत श्रेष्ठ है।

उदाहरण के लिए:

मूसा द्वारा बनाया गया तम्बू केवल नकल और परछाई था, बेशक उसे बनाने में बहुत जोर लगाया गया था (आयत 5)।

इसके अलावा मन्दिर के संबंध में किए जाने वाले बलिदान वास्तविक बलिदान के केवल प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब थे (आयतें 4, 5क)।

असली मन्दिर स्वर्ग में प्रभु द्वारा बनाया गया है (आयत 2)।

(5) स्वर्गीय तम्बू के पृथ्वी के तम्बू (मन्दिर) से श्रेष्ठ होने का मुख्य कारण यह है कि वहां पर बड़ा महायाजक सेवा करता है (आयत 2)। अनुवादित शब्द "सेवक" "सेवक" के लिए सामान्य शब्द नहीं है। इसके बजाय यह वह शब्द है जो अपने खर्च पर दूसरों के लिए काम करने का संकेत देता है। दूसरों ने सेवा की है, पर यीशु को "बढ़कर सेवा मिली है" (आयत 6)।

वाचा (8:6, 7)

लेखक का मुख्य विषय उत्तम महायाजक के रूप में यीशु है, परन्तु उत्तम बलिदान, उत्तम तम्बू और उत्तम वाचा जैसे अन्य विषयों की बात भी होती रहती है। ये सभी उस सच्चाई से जुड़े हैं कि यीशु उत्तम महायाजक है।

यदि यीशु एक उत्तम महायाजक है, तो उसके पास उत्तम बलिदान होना

आवश्यक है, जो कि उसके पास है यानी अपने आप।

यदि यीशु उत्तम याजक है तो उसके पास सेवा करने के लिए उत्तम स्थान होना आवश्यक है, जो कि उसके पास है यानी स्वर्ग में असली मन्दिर।

यदि यीशु उत्तम महायाजक है तो उसके पास उत्तम वाचा का होना आवश्यक है, जो कि उसके पास है। पुरानी वाचा अर्थात यहूदी वाचा लेवीय याजकाई से बेजोड़ ढंग से जुड़ी थी पर यीशु नई वाचा देता है तो जो पापों की सचमुच में क्षमा देती है।

उत्तम वाचा का विचार अध्याय 8 के अंतिम भाग में विकसित होता है। पिछले अध्याय में यह देखा गया था कि "यीशु एक उत्तम वाचा का जामिन ठहरा" है (7:22)। अध्याय 8 में लेखक ने कहा:

उस पर (यीशु) को उसकी सेवकाई से बढ़कर मिली, क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बांधी गई है। क्योंकि यदि वह पहली वाचा निर्दोष होती, तो दूसरी के लिए अवसर न ढूंढ़ा जाता (8:6, 7)।

लेखक ने यह क्यों कहा कि यीशु की वाचा उत्तम है?

(1) क्योंकि यीशु इसका मध्यस्थ है (आयत 6क)। लेखक यीशु की ओर ही वापस आता है। पुरानी वाचा में लोगों और परमेश्वर के बीच में एक कमजोर महायाजक खड़ा था। नई वाचा में हमारे और परमेश्वर के बीच हमारा सिद्ध महायाजक मध्यस्थ है (1 तीमुथियुस 2:5)।

(2) क्योंकि नहीं वाचा में उत्तम प्रतिज्ञाएं हैं (आयत 6ख)। कई "उत्तम प्रतिज्ञाएं" ध्यान में आती हैं, जिनमें हमारे पापों की पूर्ण और अंतिम क्षमा भी है। इनमें से कुछ उत्तम प्रतिज्ञाएं अध्याय 8 के अंतिम भाग में दी गई है।

(3) क्योंकि नई वाचा उसे प्राप्त करती है जो पहली वाचा से नहीं हो पाया। आयत 7 पहली बार पढ़ने पर आप "दोष" शब्द सुनकर चौंक सकते हैं। लेखक यह क्यों कह रहा था कि पुरानी वाचा दोष वाली है? पढ़ते हैं? पढ़ते रहें। आयत 8 आरंभ होती है, "वह उन पर दोष लगाकर कहता है....।" दोष वाचा में नहीं बल्कि लोगों में था। आयत 9 को ध्यान से देखें: "क्योंकि वे मेरी वाचा पर स्थिर न रहे।" लोगों ने समझौते के अपने योगदान को पूरा नहीं किया।

लेखक यह मानकर चला कि पत्री को पढ़ने वाले कुछ लोगों को नई वाचा के उत्तम होने पर संदेह होगा। इसलिए उसने यह दिखाने के लिए कि पुराने नियम में भी बताया गया था कि पहली वाचा अपने लोगों के साथ परमेश्वर का अंतिम प्रबंध नहीं था, यिर्मयाह 31:31-34 से उद्धृत किया। यह महत्वपूर्ण सच्चाई है कि मैं एक आसान सी समीक्षा देना चाहता हूँ कि यीशु ने हमें एक उत्तम वाचा दी है जो हमारे मनों को आश्वासन देती है।

मसीहियत उत्तम क्यों है

जो हमारे पास है	जो यह हमें देता है
एक उत्तम महायाजक	हमारे परमेश्वर तक पहुंच
एक उत्तम तम्बू	हमारे सेवक के रूप में यीशु
एक उत्तम वाचा	हमारे मनों को आश्वासन

हमें एक उत्तम महायाजक, एक उत्तम तम्बू और एक उत्तम वाचा मिली है। इसमें हम जोड़ सकते हें कि हमें एक उत्तम बलिदान मिला है, जैसा कि आयत 3 में संकेत मिलता है; और हमारी उत्तम प्रतिज्ञाओं के बारे में और बहुत कुछ कहा जा सकता है (आयत 6)।

यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र हकीकत है या फ़साना

हरशल डायर

संसार में बहुत कम लोग होंगे जो किसी-न-किसी रूप में यीशु मसीह से प्रभावित न हुए हो। इसके बावजूद इनमें से लाखों लोग हैं जो यह मानने को तैयार नहीं है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। मुस्लिम लोग मानते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र नहीं था, धार्मिक उदारवादी यह कहेंगे कि वह एक भला मनुष्य था परन्तु ये लोग उसकी ईश्वरीयता को मानने से इंकार कर देते है।

इससे सवाल यह खड़ा होता है कि हम उस मसीह के साथ क्या करें जो सुसमाचार के चार विवरणों में मिलता है? उनमें उसे स्वर्ग से उतरा परमेश्वर का पुत्र बताया गया है जो बाद में स्वर्ग में वापस उठा लिया गया जहां अब वह रहता और गद्दी पर बैठा है।

क्या यह मान लेना तर्कसंगत है कि ये लेखक जिन्होंने कोई विशेष शिक्षा नहीं ली थी, उन्होंने एक मसीह का आविष्कार कर लिया जिसे वे समझते नहीं थे या वे ऐसा कर सकते थे? पतरस के इस घटना की युक्ति निकालने की कल्पना करें जहां उसने व्यर्थ में यह डींग मारी थी कि वह कभी प्रभु का इंकार नहीं करेगा। फिर इसे उसके श्राप देते हुए और शपथ खाते हुए बल्कि यहां तक कहते हुए कि वह यीशु को तो जानता ही नहीं था कायरतापूर्वक उसका इंकार करने से जोड़ें एक ढोंगी के रूप में पतरस यदि किसी को भी यह याद दिलाना चाहता था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, एक ऐसा अंगीकार जो उसने कई बार किया, तो वह उससे जिससे वह पूरी तरह से मुकर गया था उस विश्वास को क्यों जोड़ता? फिर याद रखें कि प्रेरितों के विषय में लिखा है कि वे सब "उसे छोड़कर भाग गए" थे (मत्ती 26:56)।

उनकी लिखी बातों में सच्चाई और ईमानदारी की गूंज सुनाई देती है। यदि इन लोगों ने अपनी सोच और प्रयासों में मनुष्य के विश्वास के लिए एक ऐसा ईश्वरीय किरदार रचने का षड्यंत्र रखा तो निश्चय ही उन्होंने अपने आपको उसके पक्के, अथक चेले दिखाया होगा। यह सच्चाई कि वे अपने आपको अपने विश्वास में लड़खड़ाते और कमजोर दिखाते हैं उनके विवरणों की बेहद विश्वसनीय होने को बताती है।